ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

इक्कीसवी सदी की हिन्दी कविता में पर्यावरण चिन्ता

Environmental Concern in 21st Century Hindi Poetry

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 24/10/2021, Date of Publication: 25/10//2021

मन्नू राम मीना
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महिला
महाविद्यालय, दौसा,
राजस्थान, भारत

सारांश / Abstract

जल, वायु, भूमि की बनावट, तापमान, ऋतुएँ, खनिज पदार्थ, आर्द्रता, विभिन्न जीव, चारों ओर की ध्वनि, उद्योग धंधे, उपयोग में लाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुएं तथा हमारा संपूर्ण सामाजिक जीवन आदि वे समस्त दशाएं जिनसे मानव जीवन चारों ओर से घिरा रहता है पर्यावरण कहा कहलाता है । पर्यावरण शब्द व्यापकता को लिए हुए हैं जिसमें संपूर्ण ब्रह्मांड ही समाया हुआ है । साहित्य और समाज एक दूसरे से जुड़े हुए होने के कारण साहित्य में मानव जीवन से जुड़े समस्त घटकों की विवेचना हमेशा होती रही है । 21वीं सदी की हिंदी कविता में पर्यावरण चिंता को पर्याप्त मात्रा मे देखा जा सकता है । पर्यावरण प्रदूषण, वनों की कटाई, नगरीकरण, औद्योगीकरण का दुष्प्रभाव, बढ़ती जनसंख्या, जल का अभाव को कवियों ने प्रस्तुत किया है ।

Water, air, land texture, temperature, seasons, minerals, humidity, various living beings, surround sound, industry, various types of things used and our entire social life, etc. Surrounded by the side is called the environment. The word environment is taken for the comprehensiveness in which the entire universe is included. Literature and society are related to each other, due to which all the components related to human life have always been discussed in literature. Environmental concern can be seen in sufficient quantity in 21st century Hindi poetry. Poets have presented environmental pollution, deforestation, urbanization, the effects of industrialization, increasing population, lack of water.

मुख्य शब्दः पर्यावरण , औद्योगिकरण , नगरीकरण , रेडियोधर्मी , नंदन-कानन, सामयिक, अट्टालिकाओँ , जलवाही , प्रदूषण ।

Keywords: Environment, Industrialization, Urbanization, Radioactive, Nandan-Kanan, Contemporary, Atlas, Aquifers, Pollution.

प्रस्तावना

पर्यावरण से तात्पर्य है उन सभी प्राकृतिक और सामाजिक दशाओं से जो एक प्राणी के जीवन को चारों ओर से घेरे रहती है । साधारणतया पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है आवरण परि का तात्पर्य है "चारों ओर" जबकि आवरण का तात्पर्य है 'ढके हुए', जल, वायु, भूमि की बनावट, तापमान, ऋतुएं, खनिज पदार्थ, आर्द्रता, विभिन्न जीव, चारों ओर की ध्वनि, उद्योग-धंधे, उपयोग में लायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुएं तथा हमारा संपूर्ण सामाजिक जीवन आदि वे दशाएं हैं जिससे मानव का जीवन चारों ओर से घिरा रहता है। इस प्रकार इन सभी दशाओं की संयुक्तता को हम मानव पर्यावरण कहते हैं । संस्कृत साहित्य में कहा गया है- 'पर्यावरण' शब्द परि + आ +वृ + ल्युट् से बना है । परितः आवृणोति जीव जगदिति पर्यावरणम् ।[1] अर्थात जो जीव तथा जगत को चारों ओर से आवृत किए हुए हैं और प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से हमें प्रभावित करता है तथा साथ ही हमसे प्रभावित होता है, उसी का नाम पर्यावरण है । पर्यावरण के अंतर्गत प्राणी, वनस्पति और उससे संबंधित प्रकाश, वायु, जल, ध्वनि, एवं आर्द्रता जैसे घटक सम्मिलित हैं । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों , तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है । यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी के अंदर संपादित होती है तथा मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को प्रभावित करता है ।

पर्यावरण शब्द इतना व्यापक है कि इसमें सारा ब्रह्मांड ही समाया हुआ है । हम सभी तथा हमारा यह संसार, आकाश, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि तथा वृक्ष, नदी, पहाड़, समुद्र एवं पशु -पक्षी आदि से आवृत है । इन समस्त तत्व एवं पदार्थों का समन्वित रूप ही पर्यावरण है । उसी में सब पैदा होते हैं, जीवित रहते हैं, सांस लेते हैं, फलते -फूलते हैं और अपने समस्त कार्यकलाप करते हैं । प्रकृति के इन पांच तत्वों से मिलकर ही मानव का यह

सुंदर शरीर निर्मित हुआ है । इसके विषय में तुलसीदास ने रामचरितमानस के किष्किंधा कांड में लिखा है कि मनुष्य का शरीर भी प्रकृति के पांच तत्व पृथ्वी, जल, पावक, गगन, समीर से मिलकर बना है-

छिति जल पावक गगन समीरा ।
पंच रचित अति अधम शरीरा ॥ [2]

साहित्य में पर्यावरण चिंता की चर्चा की जाए तो कहा जा सकता है कि साहित्य और समाज एक -दूसरे से जुडे हुये है । साहित्य हमेशा मानव जीवन व उसके क्रमिक विकास व निर्वहन से जुडे समस्त घटको, तत्वों व तथ्यों को अभिव्यक्ति देता आया है । इक्कीसवी शताब्दी में मानव जीवन से जुड़े पहलुओं में सर्वाधिक चिन्तनीय विषय 'पर्यावरण प्रदूषण' का रहा है । वर्तमान में वर्षा की अनिश्चितता व अनियमितता के फलस्वरूप नदियाँ सूख रही है, तालाबों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण मानव का जीवन विनाश के कगार पर जा पहुंचा है तथा बढ़ते आणविक युद्ध आशंका ने दिलों में दहशत बना रखा है ।प्रत्येक देश का साहित्य हमेशा अपने युगीन-समाज और परिस्थितियो को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनकर आया है । क्योंकि साहित्य के माध्यम से ही मानव मन की मौजूदा समस्त समस्याओं व चिंताओं की अभिव्यक्ति होती है तथा सभी चिंताओं से मुक्ति का उपाय करने हेतु प्रयास किया जाता है । सहृदय साहित्यकार प्रकृति के प्रति, पर्यावरण के प्रति सहज रूप से आकर्षित होते हैं, अतः आदिकाल साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक पर्यावरण व प्रकृति चित्रण दिखाई देता है । इक्कीसवी सदी की कविता में प्रकृति के रमणीय रुप के चित्रण के साथ -साथ पर्यावरणीय चिंताओं को भी व्यक्त किया गया है । भक्तिकालीन कविवर रहिम का यह दोहा पर्यवरण चिन्ता को ही व्यक्त करता है-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून ।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून ॥ [3]

21 वी सदी के कवियों ने मानव जीवन की सर्वोपरि चिंता अर्थात पर्यावरणीय चिंता को अपने गीत, गजलों और दोहों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है -

बिटिया को करती विदा,
माँ जयों नेह समेत !
नदियां सिसके देखकर ,
ट्रक में जाती रेत !![4]

इस दोहे में कवि श्री समीप ने नदियों की छाती चीर -चीर कर बडे-बड़े महल व भवनों के निर्माण हेतु रेत और खनिज सम्पदा का दोहन करने वाले माफियाओं का चित्रण 'ट्रक में जाति रेत' के माध्यम से करके जहां 'बाढ़ की भयंकर विभीषिका का कारण बताया है, वही 'बिटिया की विदा' के मार्मिक प्रसंग से नदिया की अनबोली -अबूझ पीड़ा को व्यक्त किया है । डॉ- ओम प्रकाश सिंह के गीतों की चर्चा की जाए तो यह कहा जा सकता है कि उन्होंने पर्यावरण की चिंता को अपने गीतों में सशक्त अभिव्यक्ति दी है । उनकी एक नवगीत का यह छंद देखा जा सकता है जिसमें में लक्षणा के माध्यम से अपनी बात कही है -

"प्यासी आंखें,
जैसे पनघट,
प्यासे ताल -तलैया !
बिना पानी के,
यह जिंदगानी ,
कांटों की है शैय्या !
आंख - मिचौनी
करने आए
बौराए बादल" ॥[5]

नगरीकरण व औद्योगिकरण के फलस्वरुप पर्यावरण में हरित गैस बढ़ रही है और पृथ्वी हरित ग्रह के रूप में परिवर्तित हो रही है । फल स्वरुप कार्बन डाइऑक्साइड, फ्रीऑन, नाइट्रोजन ऑक्साइड और सल्फरडाइ ऑक्साइड जैसी हरित गैसों की मात्रा दिन पर दिन बढ़ती जा रही है जिसके कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है तथा ओजनपरत का क्षय हो रहा, पराबैगनी व हानिकारक अल्ट्रा वॉयलेट किरणों का प्रसार पृथ्वी पर बढ़ने से अनेक चर्म रोग उत्पन्न हो रहे है । इस स्थिति को वर्णित करते हुये कवि ऋषभ देव शर्मा आकाश की पीड़ा को अभिव्यक्ति देते हुये लिखते है-

"हेलो, मनुष्य
मैआकाश हूँ
कल तक रस था, आनंद था

आज घुटन हूं संत्रास हूं
रस का जो स्रोत था
जिससे धरा थी रसवंती
उसमें तो घोल दिया तुमने
रेडियम और यूरेनियम
जिस औंधे कुएं में से
फूट पड़ता था
आनंद का पातालफोड़ फव्वारा
काट डाला तुमने उसकी जड़ों को
रेडियोधर्मी विकिरणो के फावड़ों और नाभिकीय ऊर्जा की पलकटी से ॥[6]

वनों की अंधाधुंध कटाई, बढ़ती हुई जनसंख्या, औद्योगिकरण, नगरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है, जल और वायु के साथ-साथ मिट्टी भी प्रदूषित हो गई है । इस स्थिति को प्रकट करते हुए बलदेव बंसी लिखते हैं -

“बहुत -सी चीजें थी वहां
मिट्टी के ढेर के नीचे दबी
वर्षों से , समय की परतों कों
हटाने पर देखा
महानगरीय कचरे में
पंच महाभूतों के ऐसे -ऐसे सम्मिश्रण
नए सभ्य उत्पाद -रासायनिक
और पॉलिथीन
धरती पचा नहीं पाई
इस बार---
इतने वर्षों बाद भी
असमंजस , असमर्थ, अपमान में
अपना धरती होने का धर्म
निभा नहीं पाई---
मनुष्य जीवन के आधुनिक
आयामों के सामने
लज्जित की धरती
हाँ ! इतना जरूर हुआ
कि उस ठिठकी हुई धरती पर
मिट्टी के ढेर पर
अब कुछ कोमल कोपलें
सगर्व लहरा रही थी ॥[7]

पर्यावरण चिंता के रूप में जल का अभाव भी एक महत्वपूर्ण विषय है जिसे डॉ-ब्रह्मजीत गौतम का गीत -जल ही जीवन में इस प्रकार देखा जा सकता है-

“कह -कह कर थक गए सुधी- जन, जल ही जीवन है ।
किंतु किसी ने बात न मानी, क्या पागलपन है ॥
सूख रहे जल -स्रोत धरा के
नदिया रेत हुई
अंधकूप बन गए कुँए
बावडियाँ खेत हुई
तल में देख दरारे करता, सर भी क्रंदन है ।
काट - काट कर पेड़ सभी जंगल मैदान किए
रूठे मेघ, जिन्होंने भू को
अगणित दान दिए
मानव ! तेरे स्वार्थ का, शत-शत अभिनंदन है ।
किया अपव्यय पानी का
संरक्षण नहीं किया
फेंक - फेंक कर कचरा सब
नदियों को पाट दिया
अपने हाथों किया मरुस्थल अपना उपवन है ।
चलो बनाएँ बाँध नदी पर
कुँए, तड़ाग निखारें

जो भी जल का करें अपव्यय
समझाएँ, फटकारें
यों , फिर से यह मरू बन सकता, नन्दन-कानन है ।[8]

आधुनिक कवि श्री चंद्रसेन विराट विश्व के उन सभी मनुष्यों को एक चेतावनी देते हैं, जिन्होंने पर्यावरण से निरंतर खिलवाड़ करके विश्व मानवता को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है । कवि विराट की अत्यंत मार्मिक और सामयिक चेतावनी सच में जनमानस की आसन्त चिंता ही बन गई है -

"जानकर ढोला है बेजा पानी
गर वरूण ने नहीं भेजा पानी
एक इक बूंद को तरसेगी सदी
आपने गर न सहेजा पानी ।[9]

वर्तमान समय में अंधाधुंध हो रही वनों की कटाई ने पर्यावरण का संतुलन बिगाड दिया है । अवैध रूप से वृक्षों को काटकर वनसंपदा को लूटा जा रहा है । इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक सन्तुलन प्रभावित हो रहा है । धरती की इस पीड़ा को कवयित्री कविता वाचवनवी इस प्रकार व्यक्त कर रही है -

मेरे हृदय की कोमलता को
अपने क्रूर हाथों से
बेध कर
ऊँची अट्टालिकाओं का निर्माण किया
उखाड़ कर प्राणवाही पेड़- पौधों
बो दिए धुआँ उगलते कल -कारखाने
उत्पादन के सामान सजाए
मेरे पोर -पोर को बींध कर
स्तम्भ गाड़े
विद्युतवाही तारों के
जलवाही धाराओं को बांध दिया
तुम्हारी कुदालों , खुरपिंयों, फावड़ों
मशीनों , आरियों , बुलडोजरों से
कँपती थरथराती रही मैं
तुम्हारे घरों की नींव
मेरी बाहों पर थी
अपने घर के मान में
सरो -सामान में
भूल गए तुम ---
मैं थोड़ा हिली
तो लो
भरभराकर गिर गए
तुम्हारे घर
फटा तो हृदय
मेरा ही ।[10]

वर्तमान में जल व वायु प्रदूषण के साथ साथ मिट्टी भी प्रदूषित हो गई है। चारों ओर व्याप्त प्रदूषण के कारण पशु- पक्षियों की अनेक जातियां एवं प्रजातियों का अस्तित्व मिट चुका है और मिटने का खतरा भी मंडरा रहा है । चिड़ियों की चहचहाट से तथा ग़ौरैयों के अंडों को छूने से जो रोमांच का अनुभव होता है उससे शायद आनेवाली पीढ़ियां वंचित रह जाएंगी । इसलिए राजेंद्र मागदेव कहते हैं कि -

"हमने गौरैयों के घोंसले
रोशनदानों में देखे थे
हमने गौरैयों के घोसले
लकड़ी की पुरानी अलमारी पर देखे थे
हमने वहां गौरैयों के अंडे
पंखों ,तिनकों औ सुतलियों के बीच रखे देखे थे
हमने अंडों को चुपचाप छूकर देखा था
हम छूते ही अजीब रोमांच से भर गए थे
वह रोमांच , आनेवाली पीढ़ियों को

किस तरह से समझाएंगे हम[11]

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का प्रमुख उद्देश्य है यह बताना है कि प्रत्येक देश का साहित्य हमेशा अपने युगीन -समाज और परिस्थितियों को अभिव्यक्त करने का माध्यम रहा है । क्योंकि साहित्य के माध्यम से ही मानव मन की मौजूदा समस्त समस्याओं व चिंताओं की अभिव्यक्ति होती है तथा सभी चिंताओं से मुक्ति का उपाय करने का प्रयास किया जाता है । 21वीं सदी की हिंदी कविता में सबसे ज्वलंत समस्या पर्यावरण प्रदूषण को व्यक्त किया गया है तथा उसके विविध रूप -जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, वनों की कटाई, औद्योगिकीकरण, जनसंख्या वृद्धि आदि पर चिंता व्यक्त की है ।

निष्कर्ष

अंत में यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी की प्रमुख चिंताओं में से एक है पर्यावरण संरक्षण की चिंता । पर्यावरण अर्थात हमारे आसपास का वातावरण । यह सर्वविदित है कि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में वृक्षों और वनस्पतियों का महत्वपूर्ण योगदान है तथा इसका संतुलन मानव जीवन के लिए आवश्यक है परंतु वर्तमान में औधोगिकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई तथा अत्यधिक दोहन व वैश्विक गर्मी के कारण पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ रहा है तथा जलस्रोत सूख रहे हैं जिसके कारण पेयजल की समस्या हमारे सामने उभर करके आई है । हिन्दी कविता में इसे पर्याप्त मात्रा व्यक्त कर जनमानस का ध्यान इस ओर मोड़ने का प्रयास किया है तथा बताया है कि समय पर ठोस कदम नहीं उठाये गये तो गम्भीर परिणाम जल्दी ही सामने होगें ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वैदिक वाङ्मय में विज्ञान- डॉ- रामेश्वर दयाल गुप्त-पृ.8*
2. *रामचरितमानस किष्किंधाकाण्ड-तुलसीदास*
3. *दोहावली-रहिमदास*
4. *हरिराम समीप के दोहे-हरिराम समीप*
5. *गीत-डॉ,ओमप्रकाश सिंह*
6. *मैं आकाश बोल रहा हूँ-ऋषभ देव शर्मा, पृ.57*
7. *कूड़ा कचरा और कोंपलें-बलदेव वंशी (समकालीन भारतीय साहित्य पृ.147*
8. *जल ही जीवन है- डॉ- ब्रह्मजीत गौतम*
9. *पानी-श्री चन्द्रेस विराट*
10. *भूकम्प (मै चल तो दूँ-कविता वाचवनवी, पृ.119*
11. *गौरैया नहीं आती अब-राजेन्द्र मागदेव*